पाठ 7. मेरा नया बचपन

कविता का उद्देश्य

बचपन सुखद स्मृतियों का खज़ाना होता है। इन स्मृतियों को जितना याद किया जाता है, यह खज़ाना उतना ही बढ़ता जाता है। प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बचपन की यादों को सँजोए रखना है।

कविता का सारांश

कवयित्री अपने बचपन को याद कर रही हैं। बचपन में किसी बात की चिंता नहीं रहती। किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता। माँ अपना सारा लाड़-दुलार हमपर न्योछावर कर देती हैं। कवयित्री अपने बचपन को याद कर रही थीं कि तभी उनकी बिटिया बोल उठती है। उनकी बिटिया मिट्टी खाकर आई थी तथा कवयित्री को भी खाने के लिए कह रही थी। यह सब देखकर कवयित्री का मन प्रसन्नता से भर जाता है। अपनी बिटिया को देखकर कवयित्री में नवजीवन आ जाता है। बचपन तो लौटकर नहीं आ सकता इसलिए कवयित्री अपनी बिटिया में ही अपना बचपन जीना चाहती हैं।

अध्यापन संकेत

कविता का सस्वर वाचन करें। बच्चों से भी सस्वर वाचन करवाएँ। बच्चों से कविता के मूल भाव पर चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि यह कविता बचपन की यादों से संबंधित है। किसी के भी जीवन में उसके बचपन से जुड़ी यादें उसकी स्मृति में सदा संचित रहती हैं। बच्चों से उनके बचपन से जुड़ी कोई विशेष बात या आदत जो उन्हें याद हो, बताने को कहें। कविता की पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करें–

आ जा बचपन! .... विश्रांति।– इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि लेखिका अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए उन्हें दोबारा बुला रही हैं क्योंकि बचपन में किसी बात की कोई चिंता नहीं होती। बचपन सभी परेशानियों और दुखों से मुक्त होता है। बड़ा हो जाने पर जीवन चिंताओं तथा परेशानियों से घिर जाता है। मन की शांति कहीं खो जाती है। काश बचपन फिर से लौट आए और उसके साथ लौट आए वह प्राकृतिक शांति जो प्रत्येक बालक के मन में होती है।

वह भोली-सी .... संताप?– इन पंक्तियों में लेखिका बचपन की विशेषताएँ बताते हुए कहती हैं कि बचपन बहुत भोला और सीधा-सरल होता है। बचपन में बालक के अंदर किसी प्रकार की कोई चालाकी नहीं होती। बचपन सभी बुराइयों से दूर होता है। लेखिका कहती हैं कि आज मेरा मन दुखी है। ऐसे में मेरे बचपन क्या तू फिर से आकर मेरे जीवन का दुख-संताप मिटा सकता है?

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- अपने घर-परिवार या पड़ोस में किसी छोटे बालक की कोई शरारत देखकर या फिर उनकी कोई विशेष आदत देखकर क्या तुम्हें भी अपने बचपन की शैतानियाँ याद हो आती हैं?
- आजकल छोटे-छोटे बच्चों से घरों, दुकानों, ढाबों आदि में काम करवाया जाता है। जोकि कानूनी रूप से गलत है। इस तरह बाल मज़दूरी करवाकर लोग उन बच्चों से उनका बचपन छीन रहे हैं। जब वे बच्चे बड़े होंगे तो उनके पास उनके बचपन की मधुर स्मृतियों के स्थान पर कटु अनुभव ही होंगे। इस बारे में तुम क्या सोचते हो? उन बच्चों का बचपन बचाने के लिए तथा बालश्रम को रोकने के लिए तुम क्या सुझाव देना चाहोगे?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।